मलय पन्त

भक्ति का फल

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्।।

भक्ति नौ प्रकार से करी जा सकती है, अतः भक्ति के इन नौ स्वरूपों को नवधा भक्ति कहा जाता है। कोई भी भक्त नवधा भक्ति, अर्थात् भक्ति के नौ स्वरूप में से किसी भी स्वरूप द्वारा प्रभु की भक्ति कर सकता है।

श्रीरामचरितमानस के अरण्यकाण्ड में तुलसीदास जी ने नवधा भक्ति, अर्थात् भक्ति के नौ विभिन्न स्वरूपों का वर्णन किया है। शबरी अपने आश्रम में भगवान श्रीराम का स्वागत उनके चरण पखार कर करती हैं, अपने आश्रम में श्रीराम को आसन पर बिठा कर रस से भरे स्वादिष्ट बेर स्वयं चखकर प्रभु को अर्पित करती है। तत्पश्चात् भगवान श्रीराम शबरी को नवधा भक्ति का वर्णन करते हैं। इन्हीं नवधा भक्ति का एक प्रकार सख्य भाव है। शबरी का श्रीराम के प्रति सख्य भाव का प्रेम था। ईश्वर

को ही अपना परम मित्र अर्थात् सखा समझकर अपना सर्वस्व भगवान के प्रति समर्पण कर देना तथा सच्चे भाव से अपने पाप पुण्य का निवेदन करना ही सख्य भाव की भक्ति कहलाता है। शबरी की भक्ति से प्रसन्न होकर ही भगवान श्रीराम ने शबरी को दर्शन दिये और परमधाम जाने का वरदान दिया।

कहि कथा सकल बिलोकि हरि मुख हृदय पद पंकज धरे।
तजि जोग पावक देह हरि पद लीन भइ जहँ नहिं फिरे।।

श्रीरामचरितमानस में श्रीहनुमानजी के द्वारा भगवान श्रीराम के प्रति दास्य भाव की भक्ति का वर्णन भी मिलता है। भगवान श्रीराम श्रीहनुमानजी के दास्य भाव को स्वीकारते हुए कहते हैं

– "समदरसी मोहि कह सब कोऊ।
सेवक प्रिय अनन्य गति सोऊ।।"

श्रीराम यहां पर कहते हैं कि सेवक सदा ही मुझे प्यारा होता और मैं उसे सदा अपने पास रखता हूं, क्योंकि मेरे अतिरिक्त उसका और कोई सहारा नहीं होता है। उल्लेखनीय है कि माता सीता ने श्रीहनुमानजी को अमर होने का वरदान दिया था, अतः श्री हनुमानजी 'अमरत्व' की श्रेणी में

आते हैं।

इसी प्रकार श्रीमद्भग्वद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अर्जुन की भक्ति सख्य अर्थात् सखा भाव की है। अर्जुन ने भगवान श्रीकृष्ण के प्रति सखा भाव दर्शाया है। भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अपने विराट स्वरूप का दर्शन कराने के बाद अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण से कहते हैं –

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं – हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।

अजानता महिमानं तवेदं– मया प्रमादात्प्रणयेन वापि।।

अर्जुन अति विह्वल होकर कहते हैं, भगवन् आपके इस अद्भुत विराट स्वरूप को मैं नहीं जानता था अतः सदा ही आपको अपना सखा मानता रहा और प्रेम भाव से बिना कुछ विचार करते हुए मैंने आपको हे कृष्ण!, हे यादव! और हे सखा! कह कर सदा ही सम्बोधित किया। भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि मुझमें मन लगाने वाला बन और मेरा भक्त बन, मेरा पूजन करने वाला हो, मुझको प्रणाम कर। इस प्रकार यदि तू आत्मा को मुझमें नियुक्त करके मेरे परायण होकर रहेगा तो अवश्य ही तू मुझको प्राप्त होगा।

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः।।

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति। तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्।।

श्री भगवान कहते हैं कि मेरा जो कोई भी भक्त मुझे जिस किसी भी देवता के रूप में देखता व श्रद्धा से भजता है, उस भक्त की श्रद्धा को मैं उसी देवता के रूप में स्थिर कर देता हूँ।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति। तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।

भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि जो कोई भी मेरा भक्त मेरे लिए अत्यन्त प्रेम से पत्र, पुष्प, फल या जल इत्यादि अर्पण करता है, तो उस निष्काम प्रेमी भक्त का प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह पत्र–पुष्प, फल आदि मैं प्रीति सहित सगुण रूप से प्रकट होकर खाता हूँ। अर्थात् भगवान केवल भक्त के प्रेम, प्रीति व निष्काम भाव के ही प्रेमी हैं।

इस निष्काम भाव से की गयी भक्ति से भक्त को क्या प्राप्त होगा, इस प्रश्न के उत्तर में विस्तृत रूप में अर्जुन के साथ चर्चा करते हुए भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन जो भक्त केवल मेरे लिये ही सम्पूर्ण कर्त्तव्य कर्मों को करने वाला है, आसक्ति रहित है और सम्पूर्ण प्राणियों में वैर भाव से रहित है वह अनन्य भक्तियुक्त भक्त मुझको ही प्राप्त होता है। अतः हे अर्जुन मुझ में मन को लगा और मुझ में ही बुद्धि को भी लगा, इसके उपरान्त तू मुझ में ही निवास करेगा, इसमें लेश मात्र भी संशय नहीं है।

"मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धि निवेशय। निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः।।"

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः। यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।।

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि जिस परमपद को प्राप्त होकर मनुष्य लौटकर संसार में नहीं आते, उस स्वयं प्रकाशित परमपद को न सूर्य प्रकाशित कर सकता है, न चन्द्रमा और न अग्नि ही, और वही मेरा परमधाम है जो अव्यक्त 'अक्षर' नाम से कहा जाता है, उस भाव को परमगति कहते हैं तथा जिस भाव को प्राप्त होकर मनुष्य वापस नहीं आते, वही मेरा परमधाम है। इस निष्काम भक्ति से आसक्ति रहित भक्त को जब परमधाम की प्राप्ति हो जाए तो फिर भक्त को और क्या चाहिये। जय श्रीकृष्ण।

पता : बी–601 पंचशील एपार्टमेन्ट्स
सेक्टर 4, द्वारका, नई दिल्ली–110078
मो.: 9910655593